शिवराज सिंह चौहान

जिस दिन से चला हूँ मेरी मंजिल पे नज़र है,
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।

कर्म की दीपशिखा

DAINIK BHASKAR BHOPAL
10 DEC.2008

भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं करूंगा

शानदार जीत के बाद शिवराजसिंह चौहान से पहला साक्षात्कार

अभिलाष खांडेकर. भारी बहुमत से जीतने और भाजपा को इतिहास में पहली बार पुनः सत्तासीन करने के बाद 24 घंटे के भीतर ही मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपना काम शुरू कर दिया है। मंगलवार को उन्होंने प्रदेश में होने वाले जल संकट को लेकर अधिकारियों की बैठक ले डाली और फिर राजधानी की एक गरीब बस्ती में जाकर समस्याएं जानी। दोपहर में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं से मंत्रिमंडल की चर्चा करने वे दिल्ली चले गए। बधाईयों के लिए तांता लगाए लोगों से अभिवादन स्वीकार करने के बाद उन्होंने **दैनिक भास्कर** से विशेष साक्षात्कार में कहा कि वे भ्रष्टाचार के मामले में सख्त रुख अख्तियार करेंगे और प्रदेश को एक सीईओ के रूप में चलाना पसंद करेंगे। विकास के कामों को प्राथमिकता दी जाएगी। नतीजों की मॉनिटरिंग होगी और मानवीयता के साथ प्रदेश को सर्वांगीण रूप से विकसित करने में जनता को भागीदार बनाया जाएगा। **श्री चौहान से बातचीत के प्रमुख अंश:**

प्रश्नः वर्ष 2003 में 173 विधायक और अब 143? उस विजय और इस विजय में क्या फर्क है? संख्या कम क्यों हुई? दोनों जीतों के राजनीतिक मायने क्या हैं ?

उत्तरः याद कीजिए वह समय जब जनता खूब नाराज थी। कांग्रेस के विरोध की आंधी थी। समाज बंटा हुआ था और 'निगेटिव वोट' के आधार पर जनता ने कांग्रेस को उखाड़ फेंका था। इस बार परिस्थिति अलग थी। विकास के नाम पर वोट मांगा था। सरकार बड़े मताधिक्य से पुनः चुनी गई है भले ही विधायक कम हुए हों। यह जीत काफी अर्थपूर्ण है। हमारे कुछ विधायक- मंत्री हारे जरूर हैं पर वे स्थानीय कारणों से हारे, लेकिन भाजपा को लोगों ने सकारात्मक मतों के जरिए पुनः सत्ता सौंपी है। फिर हमारा मत प्रतिशत भी कम नहीं हुआ है। सरकार के विकास कामों पर जनता ने मुहर लगाई है वह अद्‌भुत है। देश की राजनीति को ऐसे जन-निर्णय अब नया मोड़ देंगे।

...शेष पेज 10 पर

पूर्णिमा तक समय शुभ वरना लग...

संभवतः अब ज्योतिषियों से पूछकर ही शपथ ग्रहण 12 दिसंबर को शाम साढ़े चार बजे तय किया गया है। पं. भंवरलाल शर्मा के अनुसार आगामी 14 दिसंबर से मलमास शुरू होगा। इसके पूर्व 13 तारीख को अनेक लोग शुभ कामों के लिए अच्छा नहीं मानते। उन्होंने बताया कि 12 दिसंबर को पूर्णिमा है। इसी दिन शाम साढ़े चार बजे यदि मुख्यमंत्री व उनके सहयोगी शपथ ग्रहण करेंगे तब वृषभ लग्न रहेगी। यह स्थिर लग्न कहलाती है। पं. प्रहलाद पंड्या का मत है कि 12 दिसंबर को शुक्रवार के दिन ग्रहों की स्थिति शपथ ग्रहण के लिए अच्छी है। इसके बाद न केवल मलमास प्रारंभ हो जाएगा बल्कि सूर्य धनु राशि में प्रवेश करने के साथ ही गुरू अस्त हो जाएगा जो आगामी आठ फरवरी को उदित होगा। अच्छे योग- स्थिर-वृषभ लग्न, लग्न का स्वामी- शुक्र स्वग्रही , चंद्रमा- अपनी उच्च राशि लग्न में , सप्तम भाव में- मंगल स्वग्रही, सूर्य-चंद्र का दृष्टि संगम, केंद्र में सूर्य मंगल युति, नतीजा- सरकार को मिलेगी स्थिरता हल्की गड़बड़ी- शनि सूर्य की सिंह राशि में, शनि देख रहा है राज्य भाव को, गुरू शनि की मकर राशि में , मकर में राहू भी, नतीजा- कुछ लोगों में असंतोष।

शिवराज सिंह चौहान

जीवन-यात्रा

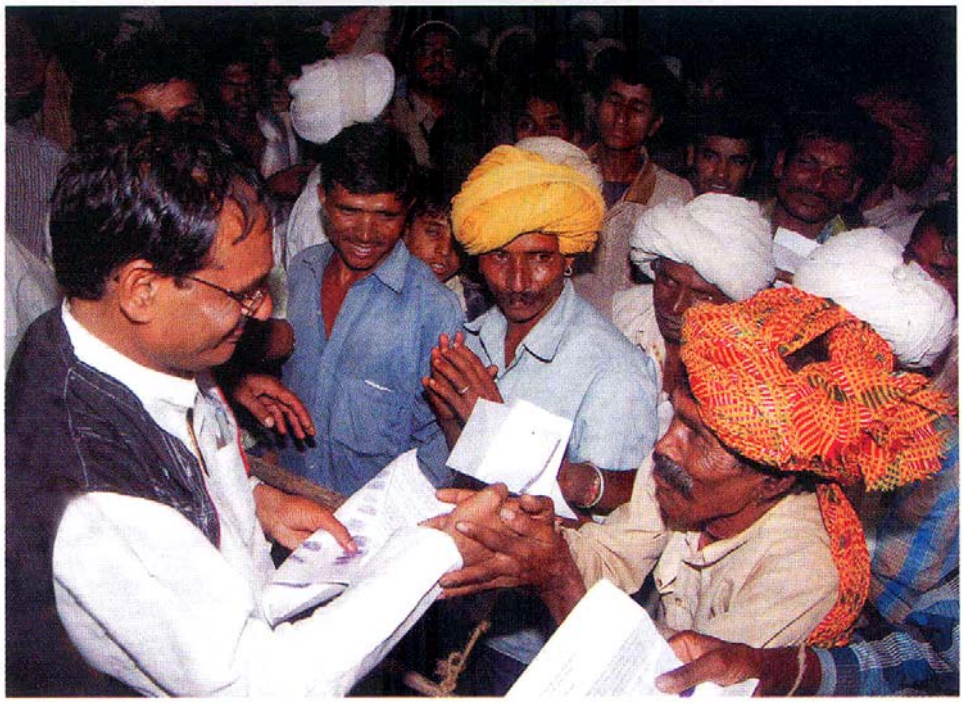

गुजरे वर्ष के अंतिम माह के दूसरे सप्ताह के दौरान मध्यप्रदेश में श्री शिवराजसिंह चौहान ने 12 दिसम्बर, 2008 को लगातार दूसरी बार मुख्यमंत्री पद का दायित्व ग्रहण कर इतिहास रचा। उन्होंने मुख्यमंत्री के रूप में अपने पिछले कार्यकाल में जनकल्याण और विकास कार्यों के द्वारा इन्द्रधनुषी मध्यप्रदेश के निर्माण के संकल्प पूरा करने का बीड़ा उठाकर जन-जन को एक संदेश दिया था। इस संदेश की मूल भावना की सच्चाई और ईमानदारी को महसूस करते हुए प्रदेश-जनों ने उन्हें प्रदेश के नव-निर्माण के लिए एक और अवसर दिए जाने पर सहमति की मुहर लगा दी।

शुरू हुई यात्रा

श्री शिवराजसिंह चौहान का जन्म 5 मार्च, 1959 को सीहोर जिले में नर्मदा के किनारे बसे एक बहुत छोटे और अल्पचर्चित गाँव 'जैत' के एक मझौले किसान परिवार में हुआ। उनके पिता श्री प्रेमसिंह चौहान और माता श्रीमती सुन्दरी बाई सादगी के जीवंत प्रतीक हैं। उनका परिवार खपरैल वाले एक पुश्तैनी मकान में रहता था। रहन-सहन मध्यमवर्गीय ही था। उनके माता-पिता ने उन्हें बचपन में ही जीवन का एक मूल मंत्र दे दिया था। वह मंत्र था-- 'कभी भी अपनी धरती और जड़ों से जुदा न होना'। माता-पिता से मिले इस संस्कार का प्रभाव उनके जीवन पर

बहुत साफ-साफ नजर आता है। वर्ष 1975 में स्कूली छात्र संघ की बागडोर संभालने से लेकर 2008 के अंतिम दिनों में दूसरी बार मुख्यमंत्री बनने तक माता-पिता की इस सीख का प्रभाव सहज और स्पष्ट दिखाई देता है।

श्रम को पूरा सम्मान

गाँव की श्रमसाध्य जिंदगी से सीधे-सीधे जुड़े होने के कारण श्री शिवराजसिंह चौहान को मेहनत शब्द के वास्तविक मायने पता है। एक वाकया श्रम के प्रति उनके गहरे सम्मान को उजागर करता है। एक बार बालक शिवराज ने वाजिब मजदूरी की माँग को लेकर गाँव के हालियों-- ग्रामीण मजदूरों को इकट्ठा किया और काम बंद करवा दिया। इस 'हड़ताल' से स्वयं उनके परिवार के खेती-किसानी संबंधी सभी काम रुक गए थे। उनके अपने बड़े-बुजुर्गों ने उन्हें इसके लिए यह सजा दी थी कि उन्हें पशुओं की सेवा-टहल का काम करेंगे।

बालक शिवराज ने यह काम भी पूरी लगन से किया लेकिन वाजिब मजदूरी की माँग पूरी होने तक उनहोंने मजदूरों को काम पर जाने से रोके रखा।

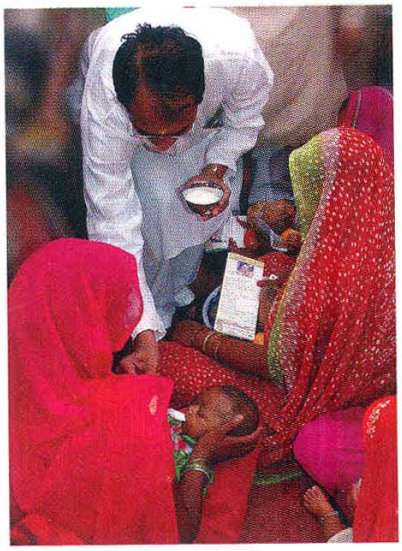

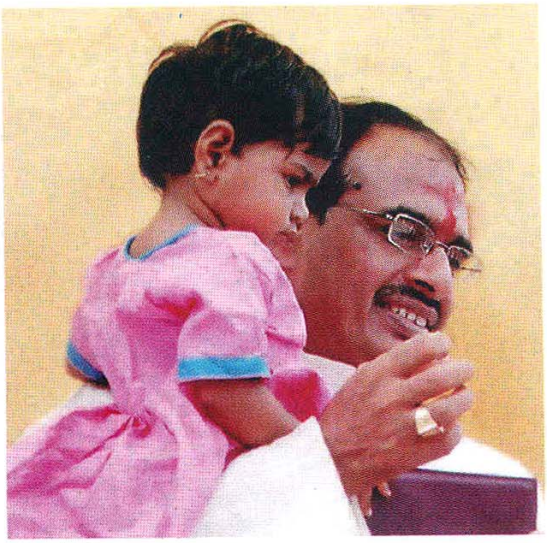

कदमों को पहचानती हैं ज़मीन

शिवराजसिंह चौहान ने राजनैतिक जीवन के शुरुआती दिनों में एक मुसाफिर-एक यायावर की तरह प्रदेश के ग्रामीण इलाकों का बहुत व्यापक और सघन दौरा किया है। गाँव की चौपालों, मंदिरों, स्कूलों और हाट बाजार की जगहों पर गाँव के लोगों के साथ बैठकर उनकी समस्याएँ सुनी है, आम-जन की तकलीफें कम करने की कोशिशें की हैं और समस्याओं के समाधान निकाले हैं।

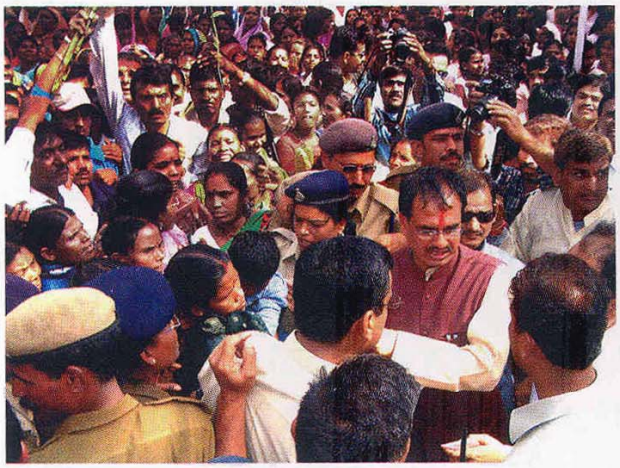

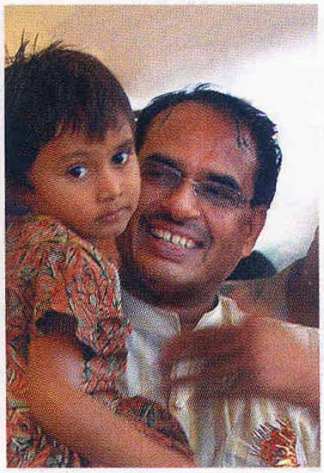

अपने साथियों के साथ गाँव की खुली दालानों में पेड़ों के नीचे उन्होंने रातें गुजारी है। ऐसा लगता है जैसे ये धरती उनके कदमों को पहचानती है और इसीलिए गाँव के लोग प्यार से उन्हें **'पाँव-पाँव वाला'** भैया कहकर भी पुकारती है। यह तथ्य भी कम रोचक नहीं है कि मुख्यमंत्री बनने के बाद भी आम जन से सीधी बातचीत की परम्परा उन्होंने बनाए रखी है। इसका एक उदाहरण है अपने सरकारी आवास पर अलग-अलग समुदायों के लोगों की लगभग 15 पंचायतों का आयोजन। ऐसा करने वाले वे सम्भवत: पहले अकेले मुख्यमंत्री है। इसके नतीजे भी बहुत आश्वस्त करते हैं।

नेतृत्व के अंकुर

निश्चित रूप से अपनी जमीन और अपनी जड़ों से श्री शिवराजसिंह चौहान के अटूट लगाव और श्रम के प्रति पूर्ण सम्मान का ही सुफल है कि स्कूल के ही दिनों में उनमें नेतृत्व की क्षमता के अंकुर फूटने लगे थे। वर्ष 1975 में भोपाल के मॉडल हायर सेकण्डरी स्कूल में ग्यारहवीं कक्षा के छात्र शिवराजसिंह चौहान छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए। इस चुनाव में सम्पन्न परिवार के अपने प्रतिद्वद्वियों को उन्होंने अपने फक्कड़ अंदाज में हराया। जो शिवराज गाँव में ठेठ देहाती अंदाज में निरीह, नादान और नासमझ लोगों को अपने हक के लिए लड़ने की प्रेरणा देते थे उन्हीं शिवराज ने स्कूल में पढ़ने वाले किशोर और युवा संगी-साथियों को अपनी बेहद ओजस्वी, प्रभावपूर्ण और असरदायक बोलने की क्षमता से इस तरह मोह लिया कि सहज ही उनकी जीत हो गई।

उनका स्कूली जीवन केवल छात्र राजनीति के लिए ही नहीं बल्कि गरीब और जरूरतमंद छात्रों की पढ़ाई के लिए आर्थिक मदद के लिए भी जाना जाता है। श्री चौहान बचपन से ही बहुत साहसी और धैर्यवान हैं। मॉडल स्कूल की वर्ष 1974-75 में गोवा गई स्कूल ट्रिप के दौरान बस के ब्रेक फेल हो जाने पर श्री

शिवराजसिंह चौहान ने पूरे धैर्य और साहस का परिचय देते हुए अनियंत्रित बस से कूदकर न केवल उसे दुर्घटनाग्रस्त होने से रोका था बल्कि छात्र साथियों के जीवन की हिफाजत भी की थी। यह किस्सा सुनाते हुए उनके सहपाठियों के चेहरों पर आज भी एक चमक आ जाती है। छात्र राजनीति को भरपूर समय देने के बावजूद शिवराजसिंह ने हमीदिया कॉलेज भोपाल से दर्शन शास्त्र में एम.ए. की डिग्री स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की। वे हर परीक्षा में हमेशा अव्वल रहे। उनकी स्मरण क्षमता अद्‌भुत थी और वे प्रतिदिन 8 से 10 घण्टे नोट्स बनाया करते थे।

स्कूल से शुरू हुई उनकी राजनीतिक यात्रा समय के साथ निरंतर नए-नए सोपान तय करते हुए आगे बढ़ती ही गई है।

जीवन के पड़ाव

आपातकाल का विरोध करने के कारण जेल जाने वाले शिवराजसिंह चौहान सबसे कम उम्र के मीसाबंदी थे। हालाकि उनकी इस जेल यात्रा के सदमे की वजह से उनकी दादी का देहांत हो गया था लेकिन उनके जीवन को जैसे मकसद मिल गया था।

शिवराजसिंह अन्य कई अवसरों पर भी राजनैतिक आन्दोलनों में भाग लेने के कारण विभिन्न जेलों में निरूद्ध रहे। वे 1977-78 में अखिल भारतीय

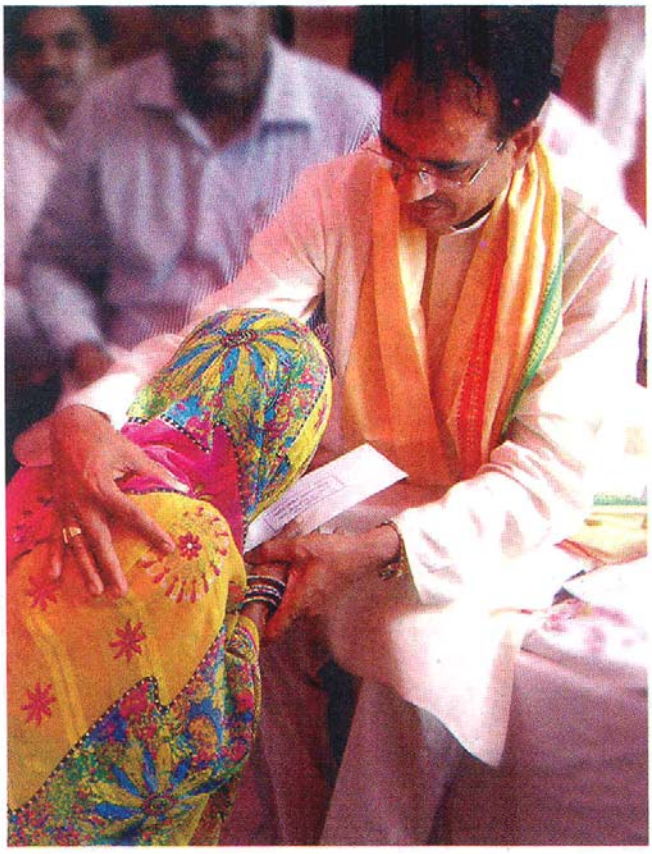

विद्यार्थी परिषद भोपाल के संगठन मंत्री बने। सन 1978 से 1980 अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की प्रदेश इकाई के संयुक्त मंत्री और 1980 से 1982 तक प्रदेश महासचिव रहे। श्री चौहान 1982-83 में वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य और वर्ष 1984-85 में भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश संयुक्त सचिव, 1985-88 में महासचिव और 1988 से 1991 तक युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बने। श्री चौहान 1990-91 में पहली बार बुधनी विधानसभा से विधायक बने।

श्री चौहान 1991 में पहली बार सांसद बने। उन्हें अखिल भारतीय केसरिया वाहिनी का संयोजक और 1992 में भारतीय जनता युवा मोर्चा का महासचिव बनाया गया। सन् 1992 से 1996 तक मानव संसाधन विकास मंत्रालय की परामर्शदात्री समिति के सदस्य, 1993 से 1996 तक श्रम और कल्याण समिति के सदस्य और 1994 से 1996 तक हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य रहे।

श्री शिवराजसिंह चौहान 11वीं लोक सभा में 1996 में विदिशा संसदीय क्षेत्र से पुनः सांसद चुने गये। सांसद के रूप में 1996-97 में नगरीय एवं ग्रामीण विकास समिति, मानव संसाधन विकास विभाग की परामर्शदात्री समिति तथा नगरीय एवं ग्रामीण विकास समिति के सदस्य रहे। श्री चौहान वर्ष 1998 में विदिशा संसदीय क्षेत्र से ही तीसरी बार 12वीं लोकसभा के लिए सांसद चुने गये। वह 1998-99 में प्राक्कलन समिति के सदस्य रहे। श्री चौहान 1999 में विदिशा से ही चौथी बार 13वीं लोकसभा के लिये सांसद निर्वाचित हुए। वे 1999-2000 में कृषि समिति के सदस्य तथा वर्ष 1999-2001 में सार्वजनिक उपक्रम समिति के सदस्य रहे।

सन् 2000 से 2003 तक भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। इस दौरान वे सदन समिति (लोकसभा) के अध्यक्ष तथा भाजपा के राष्ट्रीय सचिव रहे। श्री चौहान 2000 से 2004 तक संचार मंत्रालय की परामर्शदात्री समिति के सदस्य रहे। श्री शिवराज सिंह चौहान पाँचवीं बार विदिशा से 14वीं लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। वह वर्ष 2004 में कृषि समिति, लाभ के पदों के विषय में गठित संयुक्त समिति के सदस्य, भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव, भाजपा संदसदीय बोर्ड के सचिव, केन्द्रीय चुनाव समिति के सचिव तथा नैतिकता विषय पर गठित समिति के सदस्य और लोकसभा की आवास समिति के अध्यक्ष रहे।

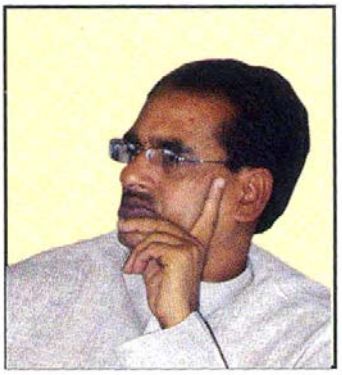

श्री चौहान 2005 में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किए गए।

श्री शिवराज सिंह चौहान को 29 नवंबर, 2005 को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई गई। प्रदेश की तेरहवीं विधानसभा के निर्वाचन में श्री चौहान ने भारतीय जनता पार्टी के स्टार प्रचारक की भूमिका का बखूबी निर्वहन कर विजयश्री प्राप्त की। श्री चौहान को 10 दिसम्बर, 2008 को भारतीय जनता पार्टी के 143 सदस्यीय विधायक दल ने सर्वसम्मति से नेता चुना।

घर परिवार

पहली बार सांसद चुने जाने के समय श्री शिवराजसिंह चौहान की उम्र 33 वर्ष हो चुकी थी जो सामाजिक परम्पराओं के अनुसार विवाह की सामान्य उम्र से लगभग 10 वर्ष अधिक थी। विवाह एवं घर-परिवार बसाने के विचार से लगभग निरपेक्ष से शिवराजसिंह चौहान ने बहन शशि सिंह और परिवार के अन्य बड़े-बुजुर्गों की समझाईश पर विवाह के लिए सहमति दी। वर्ष 1992 में गोंदिया के मतानी परिवार की पुत्री सुश्री साधना सिंह से उनका विवाह होने के साथ गृहस्थ जीवन आरंभ हुआ। श्री सिंह के परिवार में दो बेटे हैं।

निरन्तरता का जनादेश

मुख्यमंत्री के रूप में पहली पारी के दौरान समाज के प्रत्येक तबके विशेष रूप से गरीबों, पिछड़ों, महिलाओं, बालिकाओं तथा बच्चों के लिए उनके द्वारा चलाई गई योजनाओं का सुफल है कि प्रदेश की जनता ने उनहें दूसरी बार सरकार बनाने और मुख्यमंत्री के रूप में संकल्पनाओं को साकार करने की निरन्तरता प्रदान की है। उन्होंने 12 दिसम्बर, 2008 को दूसरी बार मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के पद की शपथ ग्रहण की।

दैनिक भास्कर, भोपाल
9 दिसं., 2008

शिव लहर पर सवार मप्र

निश्चित ही यह शिवराज सिंह चौहान की निजी जीत है। यह 'प्रो-इन्क्यूम्बेंसी' का भी नतीजा है, जिसने कांग्रेस के मंसूबों को ध्वस्त कर दिया। बुदनी के समीप अनजाने गांव जैत के अत्यंत साधारण परिवार में पैदा हुए शिव ने वह ऐतिहासिक काम कर दिखाया है, जो पिछले 50 वर्षों में नहीं हो सका था।

विकास मंत्र ने त्रिशंकु विधानसभा की संभावनाओं को दूर-दूर तक फटकने नहीं दिया, जो प्रदेश का सौभाग्य है। शांत और सौम्य स्वभाव के शिवराज ने कपट, कुटिलता और सियासी कुरीतियों से दूर रहकर अपनी अलग राजनीतिक राह पकड़ी और दिखा दिया कि राजनीति में आज भी

विशेष टिप्पणी

उनके जैसे लोगों की जगह सुरक्षित है। विकास को उन्होंने मुख्य मुद्दा बनाया और उसी के सहारे जीत का परचम फहराने में वे कामयाब हो गए। जीतने के लिए उन्हें किसी 'तिकड़म' की जरुरत नहीं पड़ी। चुनाव के करीब 12 दिन पहले झाबुआ जिले के एक छोटे से गांव में अपनी चुनावी सभा खत्म कर कुछ थके हुए शिवराज सिंह मुझे कह रहे थे कि भाजपा की 120 सीटें तो कहीं नहीं गईं। मैंने कहा था कि 110-115 सीटें आ सकती हैं आपकी। उन्होंने दोहराया, 120 और उससे थोड़ी अधिक ही सीटें हम जीतेंगे। उमा का 'नगाड़ा' और मायावती का 'हाथी' आपको तकलीफ नहीं देगा? इस पर आत्मविश्वास से भरे मुख्यमंत्री ने शांत स्वर में कहा था, उन्हें ज्यादा सीटें नहीं मिल रही हैं। मुख्यमंत्री के साथ भीड़ भरी अनेक सभाएं देखने-सुनने के बाद साफतौर पर लग रहा था कि 'शिवराज फैक्टर' मध्यप्रदेश में जबरदस्त तरीके से अपना काम कर रहा है, बेहद खामोशी के साथ। कांग्रेस इस फैक्टर से शायद बेखबर थी, वैसे ही जैसे उमा भारती। मध्य भारत हो या विंध्य प्रदेश, बुंदेलखंड हो या महाकौशल हर जगह शिवराज का सिक्का चल रहा था।

...शेष पेज 14 पर

शिव लहर पर सवार मप्र

कुछ ही माह पहले एक बड़े कांग्रेस नेता ने शिवराज से ही कहा था कि भाजपा से अधिक उन्हें शिवराज से डर है।

शिवराज में नरेंद्र मोदी जैसी आक्रामकता नहीं है, यही वजह है अल्पसंख्यकों ने भी भाजपा पर भरोसा किया, परंतु उनमें शीला दीक्षित जैसी सहजता है, जो उन पर मतदाताओं के भरोसे का राज है। भाजपा की जीत में शिवराज सरकार की कुछ योजनाओं का असर गांवों में खूब दिखा। गांव-गांव में 'मामा' की छवि प्राप्त शिवराज सिंह की जननी सुरक्षा, लाडली लक्ष्मी, कन्यादान, प्रसव के बाद गरीब महिला मजदूरों को 45 दिन की छुट्टी तथा आर्थिक मदद और विद्यालयों में जाने हेतु लड़कियों को गणवेश और साइकिलें देने जैसी योजनाओं ने महिलाओं को बड़ी संख्या में भाजपा की ओर मोड़ दिया। पिछले चुनाव में महिलाओं ने उमा भारती को देखकर भाजपा को वोट दिया था और भाजपा को इस बार यह चिंता थी कि महिलाएं उससे दूर न हो जाएं।

भोपाल में समाज के विभिन्न वर्गों की पंचायतें आयोजित कर मुख्यमंत्री ने जाति-आधारित कल्याणकारी योजनाओं को दरकिनार कर जन-आधारित योजनाओं को लागू किया। यह एक बड़ी चुनौती थी, क्योंकि पिछली कांग्रेस सरकार ने दलित एजेंडा जैसी योजनाओं को लाकर समाज में दरार पैदा करने की कोशिश की थी। कोटवार, किसान, खिलाड़ी, महिला, मजदूर आदि पंचायतों के जरिए भाजपा सरकार ने ऐसा वोट बैंक तैयार किया, जिसने जीत में बड़ी भूमिका चुपचाप अदा की। शिवराज ने गरीबों के सामाजिक दायित्वों में अधिकारियों के विरोध के बावजूद सरकार की सहभागिता कर दिखाई और धीरे से 'बनियों की पार्टी' को आम आदमी की पार्टी में बदल दिया। शहर हो या गांव पिछले कई माह से लोगों को शायद यह विश्वास हो गया था कि यह व्यक्ति जो बोलता है कर दिखाता है.. इसमें दंभ नहीं है और कुछ कर गुजरने की वास्तविक ललक है। बड़ी-बड़ी इनवेस्टर्स मीट में भी देशभर के उद्योगपति उनकी इस खूबी की प्रशंसा कर मप्र में पैसा लगाने की बातें कर रहे थे। इसका लाभ भाजपा को खूब मिला।

दूसरी तरफ, कांग्रेस को देखें तो व्यक्तिवाद, अहम की टकराहट एवं मुख्यमंत्री बनने की होड़ के चलते पार्टी एकजुट होकर लड़ती कहीं दिखाई ही नहीं दी। हर नेता न सिर्फ अपने वालों को जितवाने में लगा था, बल्कि अपनी ही पार्टी के दूसरों को निपटाने का काम भी बखूबी कर रहा था। कांग्रेस अपनी ही दुश्मन बनी हुई थी, परंतु संगठन स्तर पर भाजपा कांग्रेस के कहीं आगे थी। नरेंद्र तोमर, माखन सिंह और अनिल दवे ने गजब का काम कर शिवराज को हीरो बना दिया।

शिवराज की इस प्रभावी लहर में कई न जीतने वाले विधायक और दागी मंत्री भी जीतने में कामयाब हुए। यदि आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा को फिर परचम फहराना हो और मोदी व शीला की तर्ज पर एक और चुनाव जीतना हो तो उन्हें कठोर निर्णय आज से ही करना होंगे। जनता की अपेक्षाएं अब बढ़ेंगी और शिवराज को उन पर खरा उतरना होगा, क्योंकि जनता ने ही उन्हें अपना ओबामा माना है।

पत्रिका, भोपाल
9 दिसं., 2008

सत्ता ने किया 'शिव' का वरण

म ध्यप्रदेश में सत्ता ने शिवराज का वरण कर लिया। भारतीय जनता पार्टी ने पांच राज्यों के चुनाव में अपने जिन मुख्यमंत्रियों और अन्य नेताओं को प्रोजक्ट किया, उनमें शिवराज का कद सबसे बड़ा, सबसे ऊंचा साबित हो गया है। चुनावी सफलता से शिवराज का भगवाई राजनीति में सुपरब्रांड बनना तय है। कारण साफ है। नेताओं से भरपूर भाजपा में आम जनता से तादात्मय बिठाकर उन्हें पार्टी की तरफ खींचने वाले नेताओं का वास्तव में टोटा है। ऐसे में शिवराज का जननायक बन कर उभरना भाजपा के लिए खुशियों की सौगात से कम नहीं है। नरेन्द्र मोदी के साथ अब शिवराज भाजपा के सर्वाधिक प्रभावशाली नेता कहे जा सकते हैं। इसे कहना गलत नहीं होगा कि भाजपा में शिव युग की शुरुआत हो गई।

जब वे पहली बार मुख्यमंत्री बने तो यह कहने वालों की कमी नहीं थी कि सत्ता सिंहासन के ये स्वाभाविक हकदार नहीं है। पार्टी के भीतर चली उठापटक के बाद सर्वमान्य विकल्प के अभाव में शिवराज को बागडोर सौंपी गई थी। अब उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई तब आम धारणा यह भी थी कि उन्हें अनुकंपा नियुक्ति के बतौर सिंहासन सौंपा गया है और वे ज्यादा दिन इस पर काबिज नहीं रह पाएंगे। पर शिवराज ने न सिर्फ दो मुख्यमंत्रियों के बाद का बचा हुआ कार्यकाल पूरा किया अपितु भाजपा नेतृत्व को भी अपने आत्मविश्वास से इतना चकित कर दिया कि राजनाथसिंह को यह कहने पर विवश कर दिया कि हमारे मुख्यमंत्री आधे देश में राज कर रहे हैं पर मुझे सबसे ज्यादा शिव-चालीसा बांचने की आदत पड़ गई है। अपनी विनम्र छवि, आम आदमी के दिल से संवाद बनाने की क्षमता और सरल स्वभाव की बदौलत भाजपा ने उन्हें दुबारा मुख्यमंत्री के रूप में प्रोजेक्ट किया। चुनाव प्रचार पर निकटता से नजर रखने वाले जानकारों को सबसे बड़ी हैरानी इस बात को लेकर थी कि बड़े-बड़े नेताओं ने भाजपा के लिए नगर-कस्बों में वोट मांगे पर जादू शिवराज का चला। हर क्षेत्र में उनकी डिमांड थी। भाजपा के हर प्रत्याशी का यह आग्रह कि यदि मुख्यमंत्री उनके यहां एक सभा कर लें तो उनकी किस्मत संवर जाएगी। शिवराज के बिना प्रत्याशियों का असहाय महसूस करने का यह एक उदाहरण मात्र है। भाजपा का यह तर्क परीक्षण का विषय है कि जनता से उनके कामकाज से प्रभावित होकर दुबारा सत्ता पर काबिज किया है। मध्यप्रदेश में किसी तरह के रामराज के पहल नहीं की गई। बुनियादी समस्याएं भी कमोबेश ज्यों की त्यों बनी रहीं। इसलिए यह मानना कि जनता ने संतुष्ट होकर भाजपा के पक्ष में मतदान किया पूरी तरह सही नहीं होगा। हां, यह अवश्य कहा जा सकता की एंटी इंकमबेंसी जैसी कोई चीज इस चुनाव में दिखाई नहीं दी। लेकिन यह बात संदेह से परे है कि मिशन 2008 पर शिवराज का व्यक्तित्व पूरी तरह हावी रहा। आम जनता में उनकी लोकप्रियता बेहद बढ़ी। तमाम खामियों और विवादों के बावजूद उनकी योजनाएं जनता को पसंद आई। और जनता ने उन्हें दुबारा मौका दिया। यहां यह उल्लेख करना गलत नहीं होगा कि सत्ता के सेमीफाइनल माने जाने इन चुनावों में विभिन्न राज्यों में चुनाव परिणाम भाजपा के बहुत अनुकूल नहीं रहे। राजस्थान, दिल्ली, छत्तीसगढ़ आदि में भाजपा को मतदाताओं ने बड़े झटके दे दिए। पर मध्यप्रदेश में शिवराज को लोगों ने पसंद कर दुबारा सत्तासीन कर दिया। शासन-प्रशासन के बीच मजबूत सेतु की वकालत करने वाले मुख्यमंत्री की जीत को आत्म अधिकारो शिवतंत्र की जीत की संज्ञा भी देते हैं। कुल मिलाकर भाजपा ने प्रदेश में नया इतिहास रच शिव को इस जीत का महानायक बना दिया है। अब यह शिवराज पर निर्भर करता है कि वे इस जनादेश तथा आम जनता के विश्वास का किस तरह सम्मान करते हैं।

पत्रिका, भोपाल
9 दिसं., 2008

जीत का सेहरा शिवराज के सिर पर

पांच राज्यों के चुनावों के नतीजों से जो खास बात उभर कर सामने आई है वह यह है कि मतदाता में जागरूकता बढ़ी है। अब वह काम करने वाले व्यक्ति और पार्टी को तरजीह देते नजर आए हैं

प्रदेश में भाजपा की जीत का सेहरा अगर शिवराज के सिर पर बांधा जाय तो सर्वथा औचित्यपूर्ण होगा। तीन वर्ष पूर्व जब इस युवा तुर्क के सिर पर मुख्यमंत्री का ताज रखा गया था तो सियासत के इल्मियों को भरोसा नहीं था कि यह नातजुर्बेकार नौजवान भंवर में फंसी पार्टी और उसकी सरकार को पार लगा पाएगा। शिवराज की यह खूबी रही कि उन्होंने स्वयं को मुख्यमंत्री समझा ही नहीं। सारा कारोबार हिल-मिलकर सबके सलाह-मशविरे से चलाया। उनकी सिफत यही रही कि न केवल उन्होंने अपने विकेट को बचाए रखा, बल्कि पार्टी के खाते में रनों का अंबार लगा दिया।

वस्तुतः चुनाव एक शख्स के बलबूते पर लड़े नहीं जा सकते। इसके लिए नेता और उसकी पार्टी में अच्छा सामंजस्य जरूरी होता है। फिर पार्टी की कुशल व्यूह रचना और प्रबंधन की आवश्यकता होती है। शिवराज ने अपनी जो टीम चुनी उसमें नरेन्द्र सिंह तोमर, माखन सिंह, अनिल दवे इत्यादि ऐसे लोग थे जो पार्टी के लिए पूर्ण रूपेण समर्पित थे, और उनकी व्यक्तिगत भावना या दुर्भावना नहीं थी, इन्हीं लोगों के परिश्रम का प्रतिफल था जो पार्टी की जीत का सबब बना। भाजपा की जीत का एक कारण मुकाबिल कांग्रेस का हर दृष्टि से कमजोर होना भी रहा।

2003 की हार के बाद चार साल तक तो पार्टी मूर्छावस्था में रही। चुनाव के छः महीने पूर्व जब सुरेश पचौरी को कमान सौंपी गई तो भी पार्टी के अलम्बरदारों ने हिल-मिल कर आगे बढ़ने की बात सोची ही नहीं। सभी के सभी सिर्फ मुख्यमंत्री की कुर्सी हथियाने के लिए जोड़-तोड़ में लगे रहे। इसके लिये सर्वप्रथम तो कमलनाथ ने उतावलापन जाहिर किया। फिर दिग्विजय और सुभाष यादव ने उनका समर्थन किया। वस्तुतः इस प्रकार से इन नेताओं ने अपने ही आलाकमान द्वारा नामजद पचौरी के प्रति अपनी नापसंदी का इजहार कर दिया। अजय सिंह और सत्यव्रत चतुर्वेदी का सहयोग भी दिखावटी ही रहा। टिकिटों के लिए मारामारी जमकर चली। हालांकि बहुत कम समय में सुरेश पचौरी ने सबकी मान मानव्वल कर जैसे-तैसे पार्टी चुनाव अभियान को गति प्रदान करने का प्रयास किया। फिर भी किसी नेता का पुरजोर समर्थन हासिल नहीं हो सका। भीतरघात की पुरानी बीमारी से पार्टी को नुकसान पहुंचा।

उधर उमा भारती द्वारा भाजपा को नुकसान पहुंचाने का जो कयास लगाया जा रहा था वह कार्यान्वित नहीं हो पाया। रही सही कसर मुंबई में हुए आतंकवादी हमले ने पूरी कर दी। पांच राज्यों के चुनावों के नतीजों से जो खास बात उभर कर सामने आई है वह यह है कि मतदाता में जागरूकता बढ़ी है। अब वह काम करने वाले व्यक्ति और पार्टी को तरजीह देते नजर आए हैं। शिवराज ने किसानों के बिजली बिल माफ करने का जो कदम उठाया उसे वह मतदाता के गले उतारने में सफल हुए। शिवराज सरकार ने राज्य कर्मचारियों को इतना कुछ दिया इसलिए स्वाभाविक रूप से उनका समर्थन भी मिला। शिवराज ने महिलाओं के लिए भी कई योजनाएं प्रारंभ की थीं जिन्होंने उन्हें खूब लोकप्रियता प्रदान की। शिवराज ने राजधानी में सभी वर्गों की पंचायतों को बुलाकर मिलन करने का जो अभिनव प्रयोग किया वह निश्चित ही कारगर साबित हुआ। शिवराज ने नेकी कर दरिया में डाल वाली पुरानी कहावत पर अमल न करते हुए जो किया उसे जनता को बताने के लिए खूब प्रचार -प्रसार किया। नतीजा सबके सामने है। प्रदेश की जनता ने शिवराज सिंह चौहान के काम और उनके वादों को मानते हुए उन्हें एक बार फिर राज करने का अवसर प्रदान कर दिया है। अब देखना यह है कि शिवराज सिंह लोगों की अपेक्षाओं पर किस हद तक खरा उतर पाते हैं।

THE CENTRAL CHR0NICALE, BHOPAL
9 DEC 2008

People's verdict on development

Shivraj Singh impresses electorate

It is for the first time in the history of Madhya Pradesh that the Bharatiya Janata Party has returned to power for the second time. The people have given their mandate for the development and welfare schemes launched by the Shivraj Singh government. As regards the national scenario, Madhya Pradesh found itself isolated. The people of theState, have once again, given their assent to the BJP government for providing them their basic necessities including power, water etc.

Analysis

At the same time the Congress party could not impress upon the people for providing them with these necessities. Other reason for its poor performance is factionalism. The ticket distribution is also considered one of the reasons for its failure in the elections.

For the first time, a third power has made its dent in the elections and trying to influence the results.

It may be noted that the Chief Minister Shivraj Singh Chouhan had started preparations for returning to power a year back. He had given importance to announcement of new public welfare schems and better election management. The women folk ,were impressed by the Ladli Laxmi scheme and the delivery benefits as also several other public welfare plans. Both Shivraj Singh Chouhan and the party president Narendra Singh Tomar had toured various districts and selected candidates who could win.

Rajasthan has witnessed change. Congress has returned to power in Mizoram and New Delhi. But, the party failed to win in Madhya Pradesh. MPCC chief Suresh Pachauri could not improve the image of the party in the State and at the same time the party could not profit from the resentment of the people against the BJP. The second list of the party only increased the resentment among workers. Senior leaders including Kamal Nath, Arjun Singh, Digvijay Singh and Jyotiraditya Scindia could not make their own candidates victorious.

CM Shivraj should keep up his image for th[e] forthcoming Lok Sabha elections.

नव दुनिया, भोपाल
10 दिसं., 2008

नई पारी के लिए नए आत्म विश्वास से जुटे शिवराज

राजेश सिरोठिया

लड्डू खिलाते रहे

वे भी अछूते नहीं थे

THE HINDU, DELHI
13 DEC.2008

Shivraj Singh Chauhan sworn in

As Chief Minister of Madhya Pradesh for a second successive term

SECOND-TIME WINNER: Madhya Pradesh Chief Minister Shivraj Singh Chauhan seeking blessings from BJP leader L. K. Adv... oath of office at Jamboori Ground in Bh... Singh, Shivraj Sing... ni, BJP MPs ...-in ceremony.

BHOPAL: Shivraj Singh Chauhan, who brought BJP back to power in Madhya Pradesh staving off anti-incumbency and banking on politics of development, was on Friday sworn-in as Chief Minister for a second successive term.

Watched by a galaxy of top party leaders including BJP chief Rajnath Singh, Mr. Chauhan, 49, was administered the oath of office and secrecy by Governor Balram Jakhar, marking a high-point in the three-decade-old career of a politician who had taken over the reins of the party in the State at a critical time following the resignation of Uma Bharti. Mr. Chauhan was the only person to take oath and he would expand his Ministry later.

Besides Rajnath Singh, Chief Ministers of BJP-ruled States Narendra Modi (Gujarat), Raman Singh (Chhattisgarh), B. C. Khanduri and their counterparts from ... har (Nitish K...

... Lok Sabha ... Vidisha con... Chauhan, an ... ook over as Chief Minister for the first time in 2005 with little experience in administration and went on to prove everyone wrong by not only running the State successfully but also helping the BJP storm back to power.

Starting his electoral politics by winning the Budhni Assembly seat in 1990, Mr. Chauhan, however, quit the seat on November 23, 1991 to contest the Lok Sabha polls from Vidisha. Always known as a politician associated with grassroots, Mr. Chauhan was elected as Chief Minister of Madhya Pradesh on November 29, 2005 following the resignation of Ms. Bharti in the wake of a Karnataka court indicting her.

The victory in the current elections was specially sweet for him coming as it did in the face of charges of corruption against him levelled by the main opposition party, the Congress.

Mr. Chauhan was successful in carving an image for himself as the common man's Chief Minister which he always used to say by describing as one among them, a farmer's son. – PTI

दैनिक भास्कर, भोपाल
13 दिसं., 2008

मैं शपथ लेता हूं

धार्मिक–राजनीतिक गुरुओं के सान्निध्य में संभाली बागडोर

शिवराज मंत्रियों की सूची लेकर शीघ्र दिल्ली जाएंगे

शुभ मुहूर्त का रखा ख्याल

नव दुनिया, भोपाल
14 दिसं., 2008

शिव का रौद्र रूप छलका

बदले-बदले से नजर आए सरकार, दफ्तर पहुँचकर शुरू की नई पारी

भोपाल/इंदौर। विनम्र समझे जाने वाले मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने अपनी दूसरी पारी के पहले ओवर में ही अपना रौद्र रूप छलकाया। बिना कोई समय गंवाए उन्होंने अपने सात सूत्री संकल्प पर अमल शुरू कर दिया। शनिवार को इंदौर और भोपाल शहर के दौरे में आंतरिक सुरक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास जैसे महत्वपूर्ण संकल्पों पर शिवराज ने अफसरशाही को सख्त निर्देश दिए।

राजधानी के विकास कार्यों का जायजा लेते समय उनकी बॉडी लैंग्वेज में सख्ती और नरमाई एक साथ दिखी। दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास से भरपूर मुख्यमंत्री ने साफ संदेश दे दिया कि इस बार उनकी भूमिका कठोर और नतीजा पसंद सीईओ की होगी। सरकार का काम समयबद्ध होगा, इसके लिए सौ दिन की कार्ययोजना बनाई जाएगी। काम में कोई कोताही बर्दाश्त नहीं होगी। गड़बड़ी करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। शिवराज ने स्पष्ट कहा कि जिन वादों और घोषणापत्र के दम पर वे जनता का विश्वास जीत कर आए हैं, वही उनकी गीता होगी। इससे पहले शिवराज सुबह अचानक इंदौर जा पहुंचे और अफसरों को तलब कर शुक्रवार को वहां हुई डकैती पर गहरी नाराजी जताई। उन्होंने कहा कि अपराध बढ़े तो पुलिस अफसर जिम्मेदार होंगे।

शनिवार को अपरान्ह दो बजे मंत्रालय पहुंचे श्री चौहान ने अपने काम की शुरुआत ऐसे ही तेवरों के साथ की। उनके स्वरों में चिरपरिचित नरमी थी, तो कुछ मामलों में दृढ़ निश्चय, सख्त आवाज और इसके पीछे छिपा था आत्म-विश्वास। उन्होंने मुख्य सचिव राकेश साहनी को भाजपा का घोषणा-पत्र सौंपते हुए कहा कि इस पर अमल की तैयारी तत्काल शुरू कर दीजिए।

मुख्यसचिव को सौंपा घोषणापत्र

कहा अमल सुनिश्चित करें

पूजा के साथ हुई शुरुआत

मुख्यमंत्री ने शनिवार को मंत्रालय पहुंचने के बाद पांचवीं मंजिल के अपने कक्ष का रुख किया। सरकारी अवकाश होने की वजह से यहां चहल-पहल कम थी। कक्ष में पहुंचने के बाद उन्होंने एक ओर रखी भगवान गणेश और मां नर्मदा की पूजा की। प्रतिमा के पास ही भारत का संविधान भी रखा था। पूजा निपटाकर वे अपनी कुर्सी पर बैठे और बोले अब मुझे अपने सारे वादे और सौंपे हुए काम करना है। इस मौके पर मुख्यसचिव सहित अनेक वरिष्ठ अफसर मौजूद थे। इससे पहले मंत्रालय प्रवेश पर कर्मचारी नेताओं ने उनका स्वागत किया।

सीएम के सात संकल्प

- अधोसंरचनात्मक विकास कार्यों में बिजली सड़क, पानी को प्राथमिकता
- खेती नहीं रहेगी घाटे का सौदा
- महिला सशक्तीकरण
- तीव्र औद्योगिक विकास और निवेश
- गरीबों के लिए सुशासन
- आंतरिक सुरक्षा व मजबूत कानून व्यवस्था
- स्वास्थ्य-शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल

बनेगी 100 दिन की कार्ययोजना

इस मौके पर कुछ पत्रकारों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मैं एक भी क्षण व्यर्थ नहीं गंवाना चाहता। इसीलिए सुबह इंदौर गया था और वहां जो घटना हुई है उसके संबंध में जानकारियां ली हैं। अब सरकार के कामकाज के लिए सौ दिन की एक कार्ययोजना बनाई जाएगी। इसके अलावा घोषणा-पत्र पर अमल के लिए त्रिस्तरीय समय सीमा भी तय होगी ताकि जो काम तत्काल पूरे हो सकते हैं उन्हें पहले किया जाए फिर मध्यम समय सीमा वाले कामों को लिया जाएगा।

बनेंगे विभागवार लक्ष्य

उन्होंने कहा कि ... विभागों के ... किया ... लक्ष्य बता दिए जाएंगे। ...

राजधानी का ...

अपराध बढ़े तो पुलिस जिम्मेदार

इंदौर। जिस स्वर्णिम प्रदेश को गढ़ने की बात मैंने कही है, उसमें अपराध बहुत बड़ी चुनौती है। प्रदेश में सुरक्षा के मामले में हम कोई समझौता नहीं करेंगे। इंदौर में बैंक डकैती दुर्भाग्यपूर्ण है। अब अपराधों को लेकर जवाबदेही तय होगी। जिस भी इलाके में अपराध होगा वहां के अधिकारी जिम्मेदार होंगे।

यह बात मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शनिवार को विमानतल पर पत्रकारों से चर्चा के दौरान कही। शुक्रवार को इंदौर में हुई 58 लाख रु. की बैंक डकैती के बाद शनिवार सुबह अचानक इंदौर पहुंचे श्री चौहान के तेवर बेहद तीखे थे। उन्होंने कहा इंदौर में हुई घटना बेहद गंभीर है, इसीलिए मुझे आना पड़ा।

अपराध के हिसाब से रेटिंग : मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में जहां भी आपराधिक घटनाएं होंगी वहां के पुलिस अधिकारी जिम्मेदार होंगे। अच्छा काम करने वाले अधिकारी पुरस्कृत होंगे तो दोषियों को दंडित भी किया जाएगा। उन्होंने कहा हम अपराध के हिसाब से प्रदेश में ... सुरक्षा के ...

अपरा... मुख्यमंत्री ... पुलिस अधि... पूछा कि ... है। अधिकारि... करना होगा ... आरोपियों को ...

शिव का रौद्र रूप छलका

चौहान ने कहा कि सरकार गड़बड़ियां करने वालों तथा अपराधियों के मामले में बहुत ही कठोर होगी। यह नहीं देखा जाएगा कि वे लोग कौन हैं और क्या करते हैं? लेकिन सज्जनों और जरूरतमंदों के मामलों में कोमलता व संवेदनशीलता के साथ काम करेगी।

बिजली पर ठोस कदम उठाएँगे

मुख्यमंत्री ने राज्य में बिजली संकट की चुनौती के बारे में पूछे जाने पर जो कुछ कहा उसमें इशारा साफ था कि केन्द्र सरकार के रवैये की वजह से भी यह संकट बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि कई बार ताप विद्युतगृहों के लिए कोयले का संकट काफी जबर्दस्त रहा। कोयले की आपूर्ति भी पर्याप्त रूप से नहीं दी गई वहीं इस बार बारिश नहीं होने से भी बिजली की कमी बढ़ गई है, क्योंकि जलविद्युत परियोजनाओं के लिए बांधों में पानी नहीं है। लिहाजा शीघ्र ही बिजली के मुद्दे पर सरकार समीक्षा करके कुछ ठोस कदम उठाएगी। इसके अलावा वे आगामी 19 तारीख को दिल्ली यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री से मुलाकात करके केन्द्र से संबंधित मप्र के मुद्दों से उन्हें अवगत कराएँगे।

खरमास की चिंता न करें

मुख्यमंत्री ने उनके मंत्रिमंडल के गठन में आ रही खरमास की बाधा के बारे में पूछने पर कहा कि बड़ा काम हो चुका है अब खरमास की चिंता मत कीजिए। शायद उनका इशारा खुद की शपथ को लेकर था।

पत्रिका, भोपाल
18 दिसं., 2008

प्रसंगवश

आत्मविश्वास की झलक

मंगलवार को अफसरों के साथ बैठक के दौरान मुख्यमंत्री आत्मविश्वास और ऊर्जा से लबरेज दिखाई दे रहे थे

अनायास मिली सफलता व खुद की काबिलियत और श्रम के बूते हासिल की गई सफलता दोनों में जमीन-आसमान का अंतर होता है। यह अंतर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की दूसरी पारी में स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है। शिवराज सिंह इस बार आत्मविश्वास और ऊर्जा से लबालब दिखाई दे रहे हैं। इसकी झलक उस समय ही दिख गई थी जब उन्होंने शपथ लेने के दूसरे दिन इंदौर पहुंचकर अफसरों की क्लास ले डाली। मंगलवार को मंत्रालय में तो वे पूरे फार्म में दिखाई दिए। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक के दौरान वे एक मंजे हुए राजनेता नजर आए। बैठक के दौरान उन्होंने एक तरफ जहां अधिकारियों की पीठ थपथपाई, वहीं दूसरी तरफ बड़े ही संयमित लहजे में उन्हें चेतावनी भी दे दी। ऐसा लग नहीं रहा था कि ये वही शिवराज हैं जिन्हें विरोधी तो विरोधी उनके दल के ही लोग नौसिखिया निरूपित करने में लगे थे। शिवराज को जब पहली बार मुख्यमंत्री की कुर्सी मिली थी कोई भी यह मानने को तैयार नहीं था कि वे भाजपा सरकार के बचे हुए कार्यकाल को पूरा कर पाएंगे। लोगों का मानना था कि उन्हें यह कुर्सी भाजपा में जारी सिरफुटौव्वल की वजह से मिली है और जल्द ही यह किसी और के खाते में चली जाएगी। लेकिन शिवराज के जिस गुण को लोग उनकी कमजोरी मानते थे उन्होंने उसी को अपना हथियार बनाकर वह कर दिखाया जिसकी लोग कल्पना तक नहीं कर पाए थे। मुख्यमंत्री को चाहिए कि वे इस तेवर को पूरे कार्यकाल में बनाए रखें, जिससे उनका कद तो और बड़ा होगा ही, इस प्रदेश की जनता का भी भला हो जाएगा। और अभी हाल में हुए चुनावों ने यह सिद्ध कर दिया है कि जनता उसी का साथ देगी जो उसकी भलाई का काम करेगी।

दैनिक भास्कर, भोपाल
14 दिसं., 2008

नव दुनिया, भोपाल
9 दिसं., 2008

स्वदेश, इंदौर
19 दिसं., 2008

ऐसा हो शिव का स्वर्णिम प्रदेश

विशेष संपादकीय

प्रथम पृष्ठ के शेष...

ऐसा हो शिव का स्वर्णिम प्रदेश

06 नवदुनिया

भोपाल, मंगलवार 9 दिसंबर 2008

सत्य वचन

जितनी बड़ी बाधा हमारे सामने आएगी, उसे पार करने का गौरव भी उतना ही बड़ा होगा। - मोलियर

फैसला विकास के हक में

शिवराज सचमुच प्रदेश को ईमानदारी के साथ प्रगति के पथ पर ले जाना चाहते हैं, तो दागदार छवि वाले लोगों को सत्ता से दूर रखना होगा। सरकार में आने के बाद पार्टी के नेताओं की चाल, चरित्र और चेहरा तीनों बदल जाते हैं।

शिवराज नेतृत्व और विकास की जीत

(जयकृष्ण गौड़)

दैनिक भास्कर, जबलपुर
9 दिसं., 2008

दैनिक भास्कर

छिंदवाड़ा, मंगलवार 9 दिसंबर, 2008
विक्रम संवत 2065, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, एकादशी

मध्यप्रदेश में भाजपा की वापसी

शिवराज सिंह चौहान पर यह महती जिम्मेदारी है कि राज्य की जनता ने जो भरोसा दिखाया है उस पर वे किस तरह खरा उतरते हैं

मध्य प्रदेश के चुनाव परिणामों को लेकर बहुतेरे लोगों को आश्चर्य नहीं हुआ। अपनी व्यक्तिगत छवि और विकास कार्यों के मामले में कांग्रेस के कार्यकालों से अपने कार्यकाल की तुलना ने मध्य प्रदेश की जनता को काफी हद तक आश्वस्त किया और जनता ने शिवराज सिंह चौहान को अंततः राज्य की सत्ता दोबारा सौंप दी। मुख्यमंत्री के पद को लेकर उनके नाम पर पहले ही राज्य भाजपा में सहमति है, जबकि दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी की आंतरिक गुटबाजी, टिकट बंटवारे को लेकर पार्टी के भीतर ही आरोप-प्रत्यारोप और मुख्यमंत्री के उम्मीदवार को लेकर भी बरकरार ऊहापोह की स्थिति ने कांग्रेस के लिए मुश्किलें खड़ी कीं और भाजपा की राह आसान होती गई। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में चुनाव घोषणा पत्र जारी करते हुए भाजपा ने सस्ते अनाज का जो वादा किया है, उसे आर्थिक मंदी के इस दौर में वह किस तरीके से लागू करेगी, यह एक बड़ा सवाल है। क्योंकि सस्ते अनाज की नीति पर क्रियान्वयन के बाद पंजाब की बादल सरकार अर्थव्यवस्था की लगातार बिगड़ती हालत से परेशान है। आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए लोक-लुभावन नारों और विकास के दावों पर खरे उतरने की एक अहम जिम्मेदारी राज्य सरकार पर रहेगी।

उमा भारती की पार्टी भारतीय जनशक्ति पार्टी ने भाजपा के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए लगभग सभी सीटों पर प्रत्याशी खड़े किए थे, लेकिन मध्य प्रदेश के चुनाव परिणाम से साबित हुआ कि विकास के आगे धर्म और उन्माद की राजनीति को जनता ने खारिज कर दिया। दूसरी ओर मायावती की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का इन चुनावों में पूरी ताकत झोंकने से चिंतित भाजपा के लिए यह राहत की बात रही कि कहीं भी बसपा ने उनकी राह मुश्किल नहीं की। मध्य प्रदेश के चुनाव परिणाम को देखते हुए स्पष्ट लगता है कि तमाम मुद्दों के ऊपर जनता ने विकास के मुद्दे को तरजीह दी है। मध्य प्रदेश में विकास को मुद्दा बनाकर भाजपा ने बाकी भावनात्मक मुद्दों को पहले ही त्यागकर यह जता दिया कि वह विकास के मामले में किसी भी तरह से गफलत की शिकार नहीं है। दूसरी ओर कांग्रेस सहित बाकी दलों के सामने यह स्पष्ट ही नहीं था कि वे आखिरकार किस मामले में भाजपा से खुद को अलग …ते हैं? आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर …

THE HITVAD JABALPUR
10 DEC.2008

The Hitavada

They are slaves who dare not be in the right with two or three
Lowell

Moon Mesh upto 27H 29M (Rajandekar Panchang)
Nakshatra Bharni 22H 09M
Paksha Margashirsh Shukla Tithi Dwadashi 8 H 54 M
then Trayodashi 29H 37M
Muslim Zilhaj 11th Hijree 1429

Performance rewarded

THE just concluded Assembly elections in Madhya
Pradesh have shown in very clear terms that the
voters wanted to reward the Shivraj Singh Chauhan
Government for its focus on development and they
did it in an unambiguous manner, if one were to go
…he final tally the ruling Bharatiya Janata Party (BJP) was
… secure. The BJP's competitor for power, the Congress
…roved its performance over the last elections but that
…od enough and put it way behind the ruling party.
…eed a clear verdict for Mr. Shivraj Singh Chauvan
…rs to continue the good work he has undertaken
…dhya Pradesh, from a '*bimaroo*' state, as it is
…long with a few other states in the country,
…d far below on the development ladder in
…r states, to a developed, prosperous and
… people did not miss the efforts the
… to make the State well connected
… provide health care to the needy
…cation among the poorest of the
… facilities, improve the supply
…er supply scenario by adding
…ministration techno-savvy.
…ll documented and have
… international levels. It
… of the voters not to
… and allow him to
…rted for the wel-
…at painting the
… the voters.
…porated in
…s devel-
…equiy-
…num-
…er-
…e

पत्रिका, भोपाल
9 दिसं., 2008

समृद्ध बन जाएगा प्रदेश

अब वादे निभाकर राज्य को नई दिशा दे सरकार

इंडियन एक्सप्रेस, दिल्ली
19 दिसं., 2008

Chouhan has always been common man's Chief Minister

MILIND GHATWAI
BHOPAL, DECEMBER 8

THERE is an air of genuine humility about Shivraj Singh Chouhan. Whether he is operating from the chief minister's bungalow or campaigning in the hinterlands, his self-effacing demeanour rarely cracks.

"I can never become so tall to dwarf the party. It's a victory of the organisation, workers and policies," he said, in his typical low-profile way when asked whether it was a vote for the party or him.

From someone who lost the 2003 Assembly elections to becoming the party's mascot five years later, Chouhan's ride to success has been relatively smooth. Except for the 'dumper scam', which made a dent in his reputation before flickering away, Chouhan enjoyed a clean image, had come to become the face of BJP's campaign in the central Indian state.

Three months shy of turning 50, the lean and fit candidate from Budhni was so confident of his victory that he did not even campaign once for himself, leaving that to his wife Sadhna Singh.

PTI

Shivraj Singh Chouhan and wife Sadhna Singh in Bhopal on Monday

His taking over as the chief minister was a political accident because the BJP had removed Babulal Gaur and did not want to reinstate Uma Bharati. Chouhan, who was a Lok Sabha member then, made the most of the accident, introducing several measures and appropriating several central schemes as his own.

From being an RSS worker to heading the ABVP to becoming the state party chief, Chouhan had worked his way through the ranks before Uma Bharati's threat to pull down the Government catapulted him to the hotspot in November 2005.

He lacks the flamboyance of Narendra Modi and Vasundhara Raja or oratorical skill of Bharati and yet he had emerged as the party's star campaigner from the state. "Narendra Modi is Narendra Modi, I am Shivraj Singh," was all he said when someone compared the two, both having delivered in the elections consistently.

Most candidates wanted at least one meeting by the incumbent CM and he did attempt to satisfy most having campaigned rigorously. Before the elections were announced, he had set out on "Jan Ashirwad Yatra" an exercise that saw him covering the length and breadth of the state.

While the national leaders like L K Advani and Rajnath Singh were harping on internal security and terror, he stuck to development. In rallies after rallies he offered to turn agriculture into a profitable venture, rarely promising highways and skyscrapers.

Unlike his predecessors, he had opened the CM bungalow's doors to the common man, holding panchayats for groups belonging to vulnerable sections.

Only few days ago, the Congress described him as the weakest CM. "He suits us," the Opposition party taunted him. Unfazed by criticism like that, Chouhan was busy projecting himself as a 'common man' in a state that does not boast of development. Even though it was only a symbolic gesture, he rode to the secretariate on a bicycle and even sat pillion on two-wheelers in non-motorable areas.

He rarely raises his voice and usually maintains decorum with ministers and bureaucrats. No wonder, he has few enemies within the party. Even after the remarkable victory, he refused to call the Opposition names. "You know that's not my style," he said.

THE TIMES OF INDIA, DELHI
22 DEC.2008

I am just an ordinary man, says CM Chouhan

New Delhi: Having pulled an unexpected victory, Madhya Pradesh CM Shivraj Singh Chouhan on Sunday said he was an ordinary man as compared to other senior BJP leaders like Gujarat CM Narendra Modi and his former Rajasthan counterpart Vasundhara Raje.

"If I compare myself to Modiji and Vasundharaji, I am a very ordinary person. Every person is distinct from the other and has different identity. No one can be copied," Chouhan said in reply to how he weighed himself when compared to other BJP leaders. He led the BJP to victory and power for a second term in the recent assembly election in MP. The BJP won 143 of the 230 assembly seats.

SIMPLY POPULAR: Shivraj Singh Chouhan

Chouhan, who has been hailed for his "common man" image in the state, said that in future, elections would only be fought on the basis of good work. "From now on, whenever there is an election, it will be on the basis of work. People want to see work and progress and developm[...] try..I feel that r[...] all depend on [...] are at work," [...] private TV n[...] people want t[...] lose the elect[...] it in any cas[...] somebody [...] win," he ad[...]

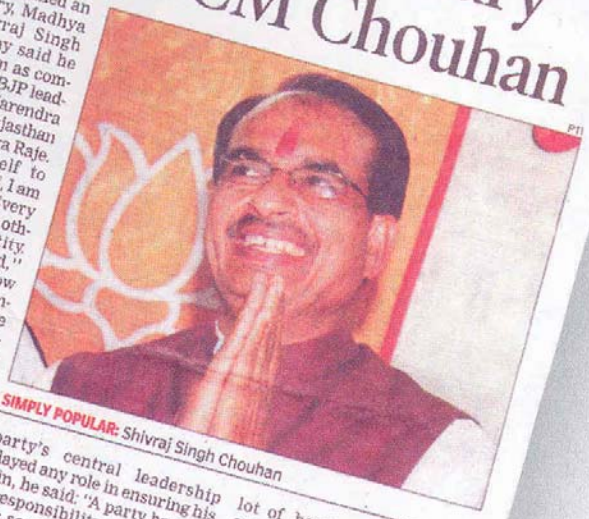

On being [...] party's central leadership played any role in ensuring his win, he said: "A party bestows a responsibility, only when it has seen one's work and the party has shown an immense amount of trust in me. That is why it becomes my prerogative as well as my priority to deliver the best."

[...] saying he [...] lot of hard work, which is appreciable when it comes to development. You can ask anyone in Rajasthan and people will certainly acknowledge her efforts."

On his ties with the RSS, Chouhan said: "Its the ideology, the thoughts that matter and all of us work together and stay united. I believe in working to[gether] and I wish to take every[...]"

CM resolves to make MP a 'golden state'

Chouhan To Focus On 7 Key Areas For Growth

Bhopal: Madhya Pradesh chief minister Shivraj Singh Chouhan, who steered the BJP to a win in the recent assembly polls, has outlined "seven resolutions" to develop and turn the state into a "golden state", officials said here.

Chouhan's focus would be on seven key areas — infrastructure development, making agriculture a more lucrative profession, enhancing industrial investment, empowerment of women, expansion of education and health facilities, a firm law and order situation and good governance for the common man.

The chief minister, during his first meeting with principal secretaries and secretaries of various departments on Tuesday said that top priority would be accorded to the above "seven resolutions" for taking the state towards peace, progress and prosperity, an official said.

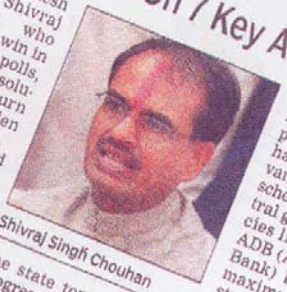

Shivraj Singh Chouhan

Chouhan directed the chief secretary to constitute special working groups to fulfil these resolutions and said that the state government's priority would be to mobilise additional resources and adopt austerity in government expenditure while delivering on the promises made in the poll manifesto, the official said.

"The chief minister also said that schemes with duplicity and the ones that have outlived their relevance should be closed and schemes funded by the Central government and agencies like World Bank and ADB (Asian Development Bank) be utilised to the maximum. The CM also stressed the need for curbing misuse of funds and irregularities in the implementation of schemes," the official added.

"The administration should do all that is required to ensure that the state advances in the next five years," Chouhan was quoted as saying by the official.

The chief minister also emphasised the need to provide maximum job opportunities through government schemes and programmes. IANS

THE TIMES OF INDIA, DELHI
18 DEC.2008

THE TIMES OF INDIA, DELHI
12 DEC.2008

From 'alternative' to people's CMs

Riding High On Victory, Chouhan Gives Credit For Win To Development Work

SURVIVING Incumbency

प्रदेश को ईमानदारी के साथ प्रगति के पथ पर ले जाना चाहते हैं, तो दागदार छवि वाले लोगों को सत्ता से दूर रखना होगा। सरकार में आने के बाद पार्टी के नेताओं की चाल, चरित्र और चेहरा तीनों बदल जाते हैं।

आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए लोक-लुभावन नारों और विकास के दावों पर खरे उतरने की एक अहम जिम्मेदारी राज्य सरकार पर रहेगी।

उमा भारती की पार्टी भारतीय जनशक्ति पार्टी ने भाजपा के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए लगभग सभी सीटों पर प्रत्याशी खड़े किए थे, लेकिन मध्य प्रदेश के चुनाव परिणाम से साबित हुआ कि विकास के आगे धर्म और उन्माद की राजनीति को जनता ने खारिज कर दिया। दूसरी ओर मायावती की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का इन चुनावों में पूरी ताकत झोंकने से चिंतित भाजपा के लिए यह राहत की बात रही कि कहीं भी बसपा ने उनकी राह मुश्किल नहीं की। मध्य प्रदेश के चुनाव परिणाम को देखते हुए स्पष्ट लगता है कि तमाम मुद्दों के ऊपर जनता ने विकास के मुद्दे को तरजीह दी है। मध्य प्रदेश में विकास को मुद्दा बनाकर भाजपा ने बाकी भावनात्मक मुद्दों को पहले ही त्यागकर यह जता दिया कि वह विकास के मामले में किसी भी तरह से गफलत की शिकार नहीं है। दूसरी ओर कांग्रेस सहित बाकी दलों के सामने यह स्पष्ट ही नहीं था कि वे आखिरकार किस मामले में भाजपा से खुद को अलग दिखाना चाहते हैं? आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर तमाम दल विधानसभा चुनाव परिणाम को लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल बता रही थी, लेकिन अब पराजित पार्टियां इसकी अलग व्याख्याएं कर रही हैं और काफी हद तक इसको लेकर अब रक्षात्मक नजर आ रही हैं। अब शिवराज सिंह चौहान पर यह महती जिम्मेदारी है कि उन पर राज्य की जनता ने जो भरोसा दिखाया है उस पर वे किस तरह खरे उतरते हैं और विकास के नारे को यथार्थ की जमीन पर किस तत्परता से काम करती है।

दृष्टि ऑफसेट / 2009

THE TIMES OF INDIA, DELHI
10 DEC.2008

A few good men: Regional satraps make a comeback

Team TOI

New Delhi: It could be the return of regional satraps in national politics. While Congress and the BJP have split the four Hindi-speaking states of Delhi, Chhattisgarh, Rajasthan and Madhya Pradesh between them, the outcome also marks the arrival of a new crop of regional leaders.

If Sheila Dikshit has been the principal architect of Congress's win in the Capital, BJP owes its successes in Madhya Pradesh and Chhattisgarh to its chief ministers of the two states — Shivraj Singh Chauhan and Raman Singh.

In Rajasthan, it was former chief minister Ashok Gehlot who led the Congress charge and is now, naturally, the frontrunner for the CM's job. Considering that BJP's campaign in the state revolved around chief minister Vasundhara Raje, the good fight that the party put up there can be ascribed to her.

In Chhattisgarh, too, polls had come down to a Raman Singh versus Ajit Jogi affair.

As it seems, the cult of the Centre being an aggregate of its local leaders pre-1967, when the Congress had a 'string of pearls' across states and Indira Gandhi was still to rise on the national firmament, is back. The iron lady's overwhelming presence after 1971 saw a decimation of satraps with only Devaraj Urs holding out in Karnataka. That is when party men say, 'high command' began to tower over states, stunting growth of local leaders. NTR's emergence in Andhra Pradesh is linked directly to strong tactics of Delhi.

Post-the helmsman phenomenon, regional forces have either been like a leader presiding over a movement directed against the Centre or Congress like M Karunanidhi, NTR, Biju Patnaik, or like Mulayam Singh Yadav, Lalu Prasad and now Nitish Kumar who have outgrown their parent platforms to emerge as satraps of consequence. Mayawati could be a new breed, having taken off as local leader but with ambitions of becoming a national player.

The results signal a turn away from the trend that they have brought a new crop of regional leaders from the ranks of what are loosely called 'all-India parties', the Congress and the BJP.

BJP, guided by the RSS philosophy of "organisation first", discourged individual faces but was trumped by A B Vajpayee's meteoric rise on the national scene. While the leadership dealt heavily with regional aspirations like Kalyan Singh, it has been forced to accommodate Narnendra Modi, B S Yedyurappa and Vasundhara Raje. It is clear that it will have to acquiesce in the enhanced statures of Raman Singh and Shivraj Singh Chauhan.

Congress continues to frown upon signs of autonomy. Yet, it had to, if only grudgingly, concede the preeminence of both Dikshit and Jogi. Now that the party has won Rajasthan, it will also have to take cognizance of increasing standing of Gehlot.

मध्यप्रदेश माध्यम
www.mpmadhyam.in, E-mail : mpmdtp@yahoo.com